# कबीर अमृत वर्षा | By Sunil Sharma |

1. गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।

2. सब धरती कागज करूँ, लेखनि सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरुगुण लिखा न जाय।

3. मेरे मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लागे है मोर।

4. साईं इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।

5. ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होय।

6. बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।

7. निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुहाय।

8. माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोय।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोय।

9. पानी मेरा बुदबुदा, अस मानस की जात।
देखत ही छुप जाएगा, ज्यूँ तारा परभात।

10. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।

11. मालिन आवत देख के, कलियाँ करें पुकार।
फूले फूले चुन लिए, काल्हि हमारी बार।

12. मनवा तो पंछी भया, उड़के चला आकाश।
ऊपर ही से गिर पड़ा, या माया के पास।

13. कबीरा गरब न कीजिए, कबहुं ना हसिए कोए।
अजहूँ नाव समुद्र में, का जाने का होए।

14. दर्शन को तो साधु है, स्मरण को गुरु नाम।
तड़पे को अधिनता, डूबन को अभिमान।

15. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके ह्रदय साँच है, ताके ह्रदय आप।

16. मन के मते न चलीये, मन के मते अनेक।
जो मन पर अवसा है, ऐ साधु कोई एक।

17. यह तन कांचा कुम्भ है, लिया फिरै साथ।

धबका लागा फूटी गयो, कछू न आया हाथ।

18. कबीर माया पापिनी, हरि सूं करे हराम।
मुख कड़ियाली कुमति की, कहण न देई राम।

19. तेरा साईं तुझमें है, जो पापन में बास।
कस्तूरी का हिरन जो फिर फिर ढूंढे घास।

20. जाति न पूछो साधु पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।

21. कबिरा सो धन सांचिये जो आगे को होय।
शिष चढ़ाये पाए, ले जात न दे कोई।

22. करता था तो क्यों रहा, अब करि क्यों पछताए।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाए।

23. जेह प्रीत न प्रेम रस, उन रसना नहीं राम।
ऐ नर इस संसार में, उपजी भये बेकाम।

24. तीर्थ गए से एक पल, संत मिले फलिचार।
संत गुरु मिले अधिक पल, कहे कबीर विचार।

25. काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब।

26. ज्यों तिल माहि तेल है, ज्यों चकमक में आग।
तेरा साईं तुझ ही में है, जाग सके तो जाग।

27. जहाँ दया वहाँ धर्म है, जहाँ लोभ वहाँ पाप।
जहाँ क्रोध वहाँ काल है, जहाँ क्षमा वहाँ आप।

28. जल में बसे कमोदनी, चंदा बसे आकाश।
जो है जा को भावना, सो ताहि के पास।

29. जेहि घट प्रेम न संचरै, सो घट जानि मसान।
जैसे खाल लोहार की, सांस लेत बिनु प्रान।

30. जग में बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय।
यह आपा तो डाल दे, दया करे सब कोय।

31. ते दिन गए अकारथ ही, संगत भई न संग।
प्रेम बिना पशु जीव न, भक्ति बिना भगवंत।

32. प्रेम न बाड़ी ऊपजे, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचे, शीश देहि ले जाई।

33. जिन घर साधु न पूजिए, हरि की सेवा नांहि।
ते घर मरघट सारखे, भूत बसै तिन मांहि।

34. तन को जोगी सब करें, मन को विरला कोई।
सहज सब सिद्धि पाए, जो मन जोगी होइ।

35. माया मुई न मन मुआ, मरि मरि गया शरीर।
आसा त्रिसना न मुई, यों कही गए कबीर।

36. साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय।

37. पाछे दिन पाछे गये, हरि सो किया न हेत।
अब पछतावे होत क्या, चिड़िया चुग गई खेत।

38. राम बुलावा भेजिया, दिया कबिरा रोए।
जो सुख साधू संग में, सो बैकुंठ न होए।

39. दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय।

40. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

41. माला फेरत जुग भया, मिता न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।

42. हाये धोये क्या हुआ, जो मन मैल न जाए।
मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाए।

43. कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सुरमा, जाति बरन कुल खोय।

44. काय मंजन क्या करे, कपड़े धोई न धोई।
उज्जल हुआ ना छुटिये, सुखनी सोई न सोई।

45. प्रेम पियाला जो पिए, शीश दक्षिणा देय।
लोभी शीश न दे सके, नाम प्रेम का लेय।

46. फल कारण सेवा करे, करे न मन से काम।
कहे कबीर सेवक नहीं, चाहे चौगुना दाम।

47. माया छाया एक सी, बिरला जाने कोय।
भगता के पीछे लगे, सम्मुख भागे सोय।

48. नहीं शीतल है चंद्रमा, हिम नहीं शीतल होय।
कबीरा शीतल संत जन, नाम सनेही होय।

49. मन बिना कछु और ही, तन साधु के संग।
कहे कबीर कारिग जी, कैसे लागे रंग।

50. शीलवंत सबसे बड़ा, सब रत्नों की खान।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन।

51. कागद करे नाव दी, पानी करा गंग।
कहे कबीर कैसे फिरु, पञ्च कुसंगी संग।

52. जाता है तो जान दे, तेरी दशा न जाइ।
खेवटिया की नाव ज्यों, चढ़ मिलेंगे आई।

53. कबीर सुत क्या करे, जागी न जपे मुरारी।
एक दिन भी न सोवता, लंबे पाँव पसारी।

54. माखी गुड़ में गड़ी रहे, पंख रहे लिपटाए।
हाथ मेल और सर धुनें, लालच बुरी बलाय।

55. ज्ञान रतन का जतन कर, माटी का संसार।
हाय कबीरा फिर गया, फीका है संसार।

56. कबीर मन पंछी भया, भए ते बाहर जाय।
जो जैसी संगती करै, सो तैसा फल पाय।

57. संत पुरुष की आरती, संतों की ही देह।
रखा जो चाहे अलख को, उन्हीं में रखे देह।

58. कुटिल वचन सबतें बुरा, जारी करै सब छार।
साधु वचन जल रूप है, बरसै अमृत धार।

59. सुमिरन मन में लाइए, जैसे नाद कुरंग।
कहैं कबीर बिसरे नहीं, प्राण तजे तेहि संग।

60. कबीर तेइ पीर है, जो जाने पर पीर।
जो पर पीर न जानई, ते काफिर बेपीर।

61. सुमिरन सूरत लगाईं के, मुख कछु न बोल।
बाहर का पट बंद कर, अन्दर का पट खोल।

62. कुल केला कुल उबरे, कुल रखा कुल जाए।
राम निकुल कुल भेट ले, सब कुल रह्या समाय।

63. चलती चक्की देख के, दिया कबिरा रोए।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोई।

64. कबीर सुत क्या करे, गुरु गोविंद के जाऐ।
तेरे सिर पर जाम खड़ा, खर्च काहे का खाए।

65. क्षमा बदन को चाहिए, चोटन को उत्पात।
महाविष्णु की घाटी गई, जो भ्रम मारी लात।

66. फिकर सभी को खा गई, फिकर ही सबका पीर।
फिकर को फाका करे जो, ताके नाम कबीर।

67. उज्जल कपड़ा पहेर कर, ही पान सुपाड़ी खाए।
एके हरि का नाम, बिन बांधे जमकुर नहीं।

68. ऊँचे कुल का जन्मीया, करनी ऊँच न होय।
सुमिरन कलश सुर भरा, साधु निंदा होय।

69. आग कहे दाजे नहीं, पांव न दीजे माही।
जो पे भेद न जानही राम, कहो तो काहि।

70. संत नाम की लूट है, लूट सके तो लूट।
अंत काल पछताएगा, जब प्राण जाएंगे छुट।

71. भक्ति भजन हरि नाम है, पूजा दु:ख अपार।
मन स्वच्छ कर्म ना, कबीर सुमिरन सार।

72. काम क्रोध मद लोभ की, जब लग घट में खाँन।
कबीर मूर्ख पंडित, दोनों एक समान।

73. मान बढ़ाई न करे, बड़ा न बोले बोल।
हीरा मुख से ना कहे, लाख हमारा मोल।

74. लकड़ी जल कोयला भयी, कोयला जल भयी राख।
मैं पापिन ऐसी जली, कोयला भयी न राख।

75. आए हैं तो जाएंगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ चले, एक बांधे जंजीर।

76. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाही।
सब अंधियारा मिट गया, दीपक देखा माही।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%95%e0%a4%ac%e0%a5%80%e0%a4%b0-%e0%a4%85%e0%a4%ae%e0%a5%83%e0%a4%a4-%e0%a4%b5%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%b7%e0%a4%be-by-sunil-sharma/